संस्कृत विभाग

संस्कृत–समवाय

वार्षिक रिपोर्ट– 2020–2021

'संस्कृत–समवाय' पीजीडीएवी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की अकादमिक समिति है। संस्कृत–समवाय के द्वारा वेद व्याख्यान मञ्जरी व्याख्यानमाला के अंतर्गत शुक्रवार 31 जुलाई, 2020 को एक वेबिनार का आयोजन किया गया। जिसका विषय– ''कौटिल्य की प्रशासन व्यवस्था'' निर्धारित किया गया था। वक्ता के रूप में प्रो. संतोष कुमार शुक्ल, संकाय प्रमुख, संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली आमंत्रित थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि संस्कृत भाषा में ज्ञान विज्ञान का अथाह भंडार है। उस ज्ञान विज्ञान को अपने बच्चों से परिचय करवाने के लिए हमने यह वेद व्याख्यान मञ्जरी व्याख्यानमाला को शुरू किया है। इस अवसर पर संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. दिलीप कुमार झा ने मुख्यवक्ता का परिचय कराते हुए विषय प्रवर्तन किया।

मुख्यवक्ता के रूप में प्रो. संतोष कुमार शुक्ल ने व्याख्यानमाला के गौरवशाली परम्परा के अनुरूप बहुत ही सहज सरल ढंग से छात्रों को ध्यान में रखते हुए अपना व्याख्यान प्रारंभ किया। उन्होंने कहा– व्यवस्थाओं का विश्वकोश है कौटिल्य का अर्थशास्त्र।

इससे पहले पीजीडीएवी कॉलेज की उप–प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा ने आशीर्वचन दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि मैं उप प्राचार्या के रूप में पहली बार भाग ले रही हूँ। उन्होंने एक श्लोक के माध्यम से समझाते हुए कहा कि जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है, राजा यदि अत्याचारी हो, पापी हो तो प्रजा भी उसका अनुकरण करती है, उसी तरह राजा के धार्मिक होने पर प्रजा भी धार्मिक होती है। वेबिनार का समापन धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। धन्यवाद ज्ञापन संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने किया।

कोरोना महामारी के कारण इस सत्र में नए छात्रों का प्रवेश पूर्ण रूप से ऑनलाइन माध्यम द्वारा 12 अक्टूबर, 2020 से 31 दिसम्बर, 2020 तक हुआ। इसी बीच 18 नवम्बर, 2020 से नए छात्रों की कक्षाएं भी शुरू हो गईं। इस सत्र में संस्कृत ऑनर्स में कुल 40 और बी. ए. प्रोग्राम में कुल 18 छात्रों ने प्रवेश लिया। नए छात्रों के प्रवेश से संबंधित सभी कार्यों को

विभाग के अध्यक्ष डॉ. दिलीप कुमार झा और रोहित कुमार ने व्यवस्थित रूप से सम्पन्न किया।

27 फरवरी, 2021 को गूगल मीट पर वेद–व्याख्यान मंजरी के अंतर्गत दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत एवं कम्प्यूटर के विद्वान डॉ. सुभाष चंद्र का बहुत ही महत्वपूर्ण व्याख्यान– ''संस्कृत का संगणकीय अनुप्रयोग'' विषय पर सम्पन्न हुआ। इस बेविनार का प्रारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया, जिसको तृतीय वर्ष की छात्रा अर्चना ने डिजिटल रूप से किया। तदुपरांत महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा का संबोधन हुआ। डॉ. शर्मा ने बेविनार के सुन्दर संयोजन और संचालन की प्रशंसा करते हुए कहा कि नासा में बहुत पहले से संस्कृत पर शोध कार्य हो रहा है। जिसमें सभी रिसर्चर ने कहा है कि संस्कृत कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा है। इस अवसर पर संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. दिलीप कुमार झा ने अपना स्वागत भाषण और विद्वान वक्ता का परिचय दिया।

तदुपरांत डॉ. सुभाष चन्द्र ने अपने व्याख्यान का प्रारंभ करते हुए कहा– हमारी प्राचीन भाषा संस्कृत थी, सभी संस्कृत में वार्तालाप भी करते थे। युद्ध कला, चिकित्सा शास्त्र, राजनीतिक शास्त्र की सारी चीजें संस्कृत भाषा में डॉक्यूमेंटेड हैं। कार्यक्रम के अन्त में संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

तत्पश्चात प्रथम वर्ष के नवागंतुक छात्रों का स्वागत कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। जिसमें प्रथम वर्ष के छात्रों से प्रश्न मंच के द्वारा संस्कृत साहित्य से संबंधित प्रश्न पूछे गए। इस कार्यक्रम में संस्कृत विभाग के सभी प्राध्यापक और छात्र–छात्राएं उपस्थित थे। डॉ. दिलीप कुमार झा जी ने अपने वक्तव्य में सभी छात्रों को शुभकमनाएं दी एवं नवागन्तुक छात्रों का स्वागत किया और डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा जी ने सभी छात्रों को सफलता के मार्ग पर चलने और भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं दी। अन्त में राजकुमार को मिस्टर फ्रेशर और शिवानी साहू को मिस फ्रेशर चुना गया।

संस्कृत विभाग वेबिनार रिपोर्ट

कौटिल्य का अर्थशास्त्र व्यवस्थाओं का विश्वकोश है

– प्रो. संतोष कुमार शुक्ल

पीजीडीएवी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग की अकादमिक समिति ''संस्कृत समवाय'' के द्वारा वेद व्याख्यान मंजरी व्याख्यानमाला के अन्तर्गत शुक्रवार 31 जुलाई, 2020 को एक वेबिनार का आयोजन किया गया। जिसका विषय– ''कौटिल्य की प्रशासन व्यवस्था'' निर्धारित किया गया था। मुख्यवक्ता के रूप में प्रो. संतोष कुमार शुक्ल, संकाय प्रमुख, संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली आमंत्रित थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि संस्कृत भाषा में ज्ञान विज्ञान का अथाह भंडार है। उस ज्ञान विज्ञान को अपने बच्चों से परिचय करवाने के लिए हमने यह वेद व्याख्यान मञ्जरी व्याख्यानमाला को शुरू किया था। हमारा कॉलेज स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विचारों को लेकर चलता है। वेद का कोई साम्य नहीं है, संस्कृत साहित्य की कोई तुलना नहीं है। काफी सारी चींजे हिंदी में अनुदित हैं, जो अंग्रेजी में पढ़ना चाहते हैं उनके लिए भी सुविधा है, संस्कृत में तो है ही। बच्चों को प्रेरित करते हुए डॉ. अग्रवाल ने कहा कि पुस्तकालय में जाकर सभी बच्चों को कौटिल्य के अर्थशास्त्र को देखना और पढ़ना चाहिए।

इस अवसर पर संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. दिलीप कुमार झा ने वक्ता का परिचय कराते हुए विषय प्रवर्तन किया। डॉ. दिलीप कुमार झा ने कहा कि मीमांसा और धर्मशास्त्र के निष्णात विद्वान प्रो. संतोष कुमार शुक्ल जी को इस रोचक विषय पर हमने आज विशेष व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया है। संस्कृत साहित्य में कुछ ऐसे साहित्य हैं, जो सार्वकालिक हैं। जैसै कालिदास, उसी तरह कौटिल्य का अर्थशास्त्र मल्टीडिसिप्लिनरी पुस्तक है। जिसमें तत्कालीन समाज की आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक इत्यादि पहलुओं की जानकारी मिलती हैं। उनके सिद्धान्त आज भी प्रांसगिक है। डॉ. झा ने आगे कहा कि बहुत लम्बा कालखंड गुलामी का रहा जिसमें बहुत सारी पाण्डुलिपियां नष्ट हो गई। इसी क्रम में उन्होंने यह भी कहा कि पं. शामशास्त्री ने कौटिल्य के अर्थशास्त्र का अंग्रेजी में 1905 ई. में तथा गणपति शास्त्री ने संस्कृत में प्रकाशित किया। इस प्राचीन ग्रंथ में आधुनिक सोच की तरह फेडरल व्यवस्था थी, जिसमें मंत्रिपरिषद, ग्राम पंचायत इत्यादि हैं। प्रशासनिक व्यवस्था लोककल्याण के लिए थी वसुधैव कुटुम्बकम् वाली।

इस वेबिनार का विधिवत शुरुआत संस्कृत की समृद्ध परंपरा मंगलाचरण से हुई। वैदिक मंगलाचरण संस्कृत ऑनर्स द्वितीय वर्ष की छात्रा आकांक्षा ने किया, वहीं लौकिक मंगलाचरण द्वितीय वर्ष की ही छात्रा अर्चना ने किया।

मुख्यवक्ता के रूप में प्रो. संतोष कुमार शुक्ल ने व्याख्यानमाला के गौरवशाली परम्परा के अनुरूप बहुत ही सरल ढंग से छात्रों को ध्यान में रखते हुए अपना व्याख्यान प्रारंभ किया। उन्होंने कहा कौटिल्य को याद करना इसलिए जरूरी है कि वे दुनियां के महान विचारक एवं चिन्तक थे, वे राष्ट्र निर्माता थे। उनके मन में पीड़ा थी, वो राष्ट्र को अखंड, अपराजित बनाना चाहते थे। एक आचार्य के रूप में शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र में परिवर्तन की धारा बनाई। कौटिल्य की शिक्षा तक्षशिला में हुई, जो इस समय भारत में नहीं है। वे आजीवन ब्रह्मचारी रहें। विद्यार्थी तैयार करते रहे। उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित किया। ऐसा ग्रंथ दिया जो कौटिल्य के अर्थशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध है। कौटिल्य जिन्हें विष्णुगुप्त तथा चाणक्य के नाम से भी हम जानते हैं। शासन व्यवस्था की हर बात कौटिल्य अर्थशास्त्र में है। उसमें सूत्ररूप में बातें कहीं गई हैं। व्यवस्थाओं का विश्वकोश है कौटिल्य का अर्थशास्त्र। कौटिल्य ने राजाओं के शासन विधि का निर्माण किया, जो राजा बनना चाहते हैं या राज्य शासन में जाना चाहते हैं, उन्हें यह ग्रंथ पढ़ना चाहिए। यह ग्रंथ बहुत बड़ा हो सकता है लेकिन संक्षेप में लिखा है, कम शब्दों में अधिक बातें। उसके बाद प्रो. शुक्ल ने राजा के गुणों को बताते हुए कहा कि राजा को खुद विनीत होना चाहिए। विद्या युक्त होना चाहिए। विद्या केवल किताब पढ़ने से नहीं आती है। वह अधीति (अध्ययन), बोध , जीवन में आचरण से आती है तभी हमें इसके उपदेश के प्रचार का अधिकार मिलना चाहिए। दूसरों को उपदेश तो हर कोई देता है पर कोई अपने पर लागू नहीं करना चाहता। प्रजा के हित में ही राज्य का हित है। राजा न्याय करें, न्याय ऐसा हो कि जिसने अपराध किया है उसे दंड मिले, जिसने अपराध नहीं किया है उसे दंड नहीं मिले। क्योंकि अपराधी को दंड नहीं मिलता तो प्रजा खुश नहीं रहती है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में राजा के बारे में विस्तार से कहा गया है।

प्रो. संतोष शुक्ल ने अपने संबोधन के अगले भाग में कहा कि अर्थशास्त्र शासन–प्रशासन के लिए है। राजा और राजनीति के लिए यह टेक्स्टबुक की तरह है। फिर उन्होंने अर्थशास्त्र के कलेवर को बताते हुए कहा कि यह बहुत व्यापक ग्रंथ है, जिसमें राजनीति, अर्थ–वित्तनीति, विदेशनीति, सामान्य लोक प्रशासन से लेकर मिलिट्री सांइस तक अनेक विषय हैं। यह 15 अधिकरण और 150 अध्यायों में बंटा हुआ है। पहला अधिकरण विनयाधिकरण है जिसमें नियुक्तियों पर चर्चा है। राजा के बाद आमात्य मंत्री पुरोहित की नियुक्ति। गुप्त उपायों से गुप्तचरों की नियुक्ति का वर्णन है। इंटेलिजेंस पर जोर दिया गया है, क्योंकि पूरा सिस्टम उसी पर आधारित होता है। राजदूतों की नियुक्तियों से लेकर आमात्य के कुल 30 विभाग उसमें बताया गया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में व्यक्ति का जीवन शीशे की तरह साफ था, चार प्रकार से एक व्यक्ति की परीक्षा होती थी– धर्मोपधा, अर्थोपधा, कामोपधा,और भयोपधा। प्रो. शुक्ल ने दो उदाहरण देकर बताया कि शासन व्यवस्था में रहने वाले लोग स्वाभाविक रूप से भ्रष्टाचार कर सकते हैं, जैसे जिह्वा पर मधु और विष रखें। क्या यह सोच सकते हैं कि जीभ उसका स्वाद न लें, यह हो नहीं सकता। इसी तरह संस्था अथवा प्रशासन में लगे लोग जरूर भ्रष्टाचार करेंगे। उन्होंने दूसरा उदाहरण यह दिया कि जिस प्रकार मछली पानी में चलती है और चलते–चलते कब पानी पी लेती है पता नहीं चलता। उसी तरह शासन व्यवस्था में शामिल लोग भ्रष्टाचार करते हैं। इसलिए उस पर निगरानी जरूरी है। इसी तरह तीक्ष्ण दण्ड, मृदु दण्ड इत्यादि दण्ड व्यवस्था को भी उन्होंने समझाया। प्रो. शुक्ल ने व्याख्यान के अंतिम भाग में कहा कि अर्थशास्त्र के सप्तांग सिद्धांत में राजा विधि निर्माता नहीं है बल्कि उसका पहला भाग है। राजत्व भी एक व्यक्ति से नहीं चलता है, जो 30 विभाग बनाये गए हैं बिना उसके सहयोग के नहीं चलता। इस तरह समग्रता से कौटिल्य के कर व्यवस्था सहित सभी प्रशासन व्यवस्थाओं को प्रो. शुक्ल ने समझाया।

इससे पहले पीजीडीएवी कॉलेज की उप प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा ने आशीर्वचन दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि मैं उप प्राचार्या के रूप में पहली बार भाग ले रही हूँ। वैसे वेद व्याख्यान मंजरी में हमेशा रही हूँ। जब दिलीप जी ने मुझे यह विषय बताया तो हमने भी पढ़ा। उन्होंने एक श्लोक–

राज्ञ धर्मिणी धर्मिष्ठाः पापे पापा समे समाः।
राजानमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजा।।

को समझाते हुए कहा कि जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है, राजा यदि अत्याचारी हो, पापी हो तो प्रजा भी उसका अनुकरण करती है, उसी तरह राजा के धार्मिक होने पर प्रजा धार्मिक। उन्होंने अपने संबोधन के अंत में

ऑनलाइन शिक्षा की खामियों का उल्लेख किया, जिसमें विद्यार्थी सिर्फ सुनते हैं, जब सामने में होते हैं, तब बच्चे शिक्षक से आचरण भी सीखते हैं।

वेबिनार का समापन धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। धन्यवाद ज्ञापन संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने किया। उन्होंने वेद व्याख्यान मंजरी व्याख्यानमाला के शुभारंभ करने वाले प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल को धन्यवाद देते हुए कहा कि उनके प्रयासों से कॉलेज में संस्कृत से इतर जो बच्चें हैं, उन सबको भी संस्कृत के ज्ञान–विज्ञान से अवगत कराने के लिए यह व्याख्यानमाला प्रारंभ किया, तथा हमेशा उत्साहवर्धन करते रहते हैं। उनके कारण ही यह व्याख्यानमाला हो रही है। उनका आभार। उसी तरह प्रशासनिक रूप से उपप्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा पहली बार भाग ले रही हैं, लेकिन वेद व्याख्यान मंजरी में मंच संचालन से लेकर तमाम व्यवस्था तक वह करती रही हैं, उनका भी धन्यवाद। प्रो. संतोष कुमार शुक्ल ने सहज ढंग से बच्चों को अर्थशास्त्र के बारे में बताया। विष्णुगुप्त, चाणक्य, कौटिल्य, को हमारे बच्चे विशाखदत्त के मुद्राराक्षस नाटक के माध्यम से पढते रहें है, आज उनका और ज्ञानसंवर्धन हुआ है। काबिलेगौर है कि इस वेबिनार में विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के संस्कृत प्रेमी विद्वानों ने भी भाग लिया।

संस्कृत के ज्ञान परंपरा को सभी तक पहुंचाने के लिए नवाचार की जरूरत है

– डॉ. सुभाष चन्द्र

''संस्कृत–समवाय'' के द्वारा 27 फरवरी 2021 को गूगल मीट पर वेद–व्याख्यान मंजरी के अन्तर्गत दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत एवं कम्प्यूटर के विद्वान डॉ. सुभाषचंद्र का बहुत ही महत्वपूर्ण व्याख्यान– ''संस्कृत का संगणकीय अनुप्रयोग'' विषय पर सम्पन्न हुआ। इस बेविनार का प्रारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया, जिसको तृतीय वर्ष की छात्रा अर्चना ने डिजिटल रूप से किया। तृतीय वर्ष के छात्र सौरभ ने वैदिक मंगलाचरण किया। विकास ने लघुफिल्म के माध्यम से पीजीडीएवी कॉलेज की गौरवशाली अतीत और संस्कृत विभाग की परंपराओं को बताया। बेविनार का संचालन आकांक्षा पाठक ने किया। तदुपरांत महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा का संबोधन हुआ। डॉ. शर्मा ने बेविनार के सुन्दर संयोजन और संचालन की प्रशंसा करते हुए कहा कि मैं वेद व्याख्यान मंजरी के अंतर्गत आयोजित व्याख्यानों में प्रारंभ से जुड़ी रही हूँ, परन्तु इतना सुन्दर संचालन और इतनी बड़ी संख्या में छात्रों की उपस्थिति पहले कभी नहीं रही। उन्होंने कहा कि नासा में

बहुत पहले से संस्कृत पर शोध कार्य हो रहा है। जिसमें सभी रिसर्चर ने कहा है कि संस्कृत कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा है। प्राचार्या महोदया ने आगे कहा कि भारत में कुछ समय पहले तक संस्कृत को लेकर जो भी स्थिति रही हो लेकिन इस समय संस्कृत को जो सम्मान मिल रहा है वह गर्व का विषय है। धीरे धीरे संस्कृत को लेकर समाज में भी बदलाव आ रहें हैं।

इस अवसर पर संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. दिलीप कुमार झा ने अपना स्वागत भाषण और विद्वान वक्ता का परिचय दिया। गौरतलब है कि पीजीडीएवी महाविद्यालय में प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए आयोजित होने वाला नवागंतुक स्वागत समारोह भी कोरोना काल के कारण इसी विशिष्ट व्याख्यान के साथ ही किया गया था। वैसे कॉलेज की परम्परा भी इसी तरह की रही है। उसी परम्परा का निर्वाह करते हुए डॉ. झा ने प्रथम वर्ष के छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि आज का विषय नया है और इस महत्वपूर्ण विषय पर पीजीडीएवी कॉलेज डॉ. सुभाष चन्द्र जी को वक्ता के रूप में पाकर धन्य है। डॉ. दिलीप झा ने आगे कहा कि डॉ. सुभाषचंद्र जी दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत और कम्प्यूटर को लेकर एक नई परम्परा को शुरू करने वाले आचार्य हैं।

तदुपरांत डॉ. सुभाष चन्द्र ने अपने व्याख्यान का प्रारंभ करते हुए कहा कि यह विषय नया है, और छात्र भी संस्कृत भाषा के हैं इसलिए मैं संस्कृत का संगणकीय अनुप्रयोग पर बात करने से पहले कुछ बातों पर ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ कि यह विषय क्यों जरूरी है। हमारी प्राचीन भाषा संस्कृत थी, सभी संस्कृत में वार्तालाप भी करते थे। आजकल विदेशों में संस्कृत की स्थिति अच्छी है। प्राचीन काल में ज्ञान विज्ञान की भाषा संस्कृत थी। युद्ध कला, चिकित्सा शास्त्र राजनीतिक शास्त्र सारी चीजें संस्कृत भाषा में डॉक्यूमेंटेड है। परन्तु आज मूल संस्कृत टेक्स्ट नहीं पढते, अनुवाद पढ़ते पढाते हैं। डॉ. सुभाष ने उदाहरण देकर बताया कि कोई आयुर्वेद का चिकित्सक भस्म का अंग्रेजी अनुवाद आयरन डस्ट का प्रयोग करके इलाज करेगा तो वह बेहतर नहीं कर पाएगा। जितना भस्म को पढ़ कर करेगा। आयुर्वेद में भस्म बनाने की एक खास विधि है। संस्कृत सभ्यता एवं संस्कृति से जुड़ी हुई है। कई सारी कमियां वेदों के समय में थी इसलिए वेदों को समझने के लिए वेदांग की रचना हुई। छन्द, ज्योतिष,

निरुक्त व्याकरण आदि। अष्टाध्यायी जैसा ग्रंथ लिखा गया, तब भी बात नहीं बनी तो प्रक्रिया ग्रंथ लिखा गया। भाष्य लिखे गए। धीरे धीरे सिद्धांत कौमुदी और लघुसिद्धांत कौमुदी तक आये। आज स्थिति यह है कि लघुसिद्धांत में भी कुछ चिन्हित सूत्र ही पढाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि समय के अनुरूप अपनी ज्ञान परम्परा को लोगों तक पहुंचने के लिए आपको आज की तकनीक में ही बातें करनी होगी। समय के साथ नवाचार (इनोवेशन) की जरूरत है। वक्ता ने अपने लम्बे व्याख्यान में यह कहा कि भारत में जितनी भाषाएं हैं उनमें से सिर्फ 10 भाषाएं स्क्रिप्ट में लिखी जाती है। भाषा के रूप में संस्कृत सबसे प्राचीन भाषा है यह किसी राज्य की भाषा नहीं है, अभी हाल ही में उत्तराखंड में बनाई गई है। न के बराबर बोली जाती है। फिर भी यह भाषा शास्त्रीय परम्परा की भाषा है। किसी प्रदेश और देश की भाषा नहीं है फिर भी सबकी भाषा है। संस्कृत परिष्कृत और नियमबद्ध भाषा है। इसके बाद मुख्य विषय की चर्चा करते हुए डॉ. सुभाष चन्द्र ने कहा

कि संगणकीय भाषा विज्ञान क्या है? उसके बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि संगणकीय भाषा विज्ञान प्राकृतिक भाषाओं का कम्प्यूटर के सांख्यिकीय या नियम आधारित मॉडलिंग से सम्बंधित एक अंतर्विषयक (भाषा विज्ञान एवं कम्प्यूटर) क्षेत्र है व मानवीय भाषाओं या प्राकृतिक भाषाओं का कम्प्यूटर के द्वारा विश्लेषण करना ही संगणकीय भाषा विज्ञान है।

सर्वप्रथम 1950 के दशक में अमेरिका द्वारा पाठ के स्वतः अनुवाद के लिए शुरू किया गया। भारत में इसका प्रारंभ आई. आई. टी. कानपुर के द्वारा 1980 के आसपास किया गया। धीरे धीरे धीरे इसका विकास हुआ और लगभग सभी आई. आई. टी., सी. डैक. सी., आई. आई. एल. मैसूर तथा कुछ विश्वविद्यालयों में अध्ययन एवं अध्यापन हुआ। सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार ने 1991 में भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी का विकास (TDIL) किया। इन सबकी ऐतिहासिक यात्रा चर्चा करने के बाद पाणिनीय सिस्टम के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि पाणि ानि सिस्टम की विशेषता यह है कि पाणिनीय सिस्टम में स्वनिम अवयव दो प्रकार के हैं– 1. स्वनिम (Phonetic Component) और 2. प्रत्याहार, आदिरन्त्येन सहेता। स्वनिम में 14 शिवसूत्र है। इसमें नियम डेटाबेस के बारे में बताया है। डेटाबेस दो प्रकार के हैं–1. धातुपाठ व 2.गणपाठ। डॉ. साहब ने आगे कहा कि आज प्रोग्रामिंग भाषाओं में भी इन सभी बातों का ही अनुकरण किया जाता है। DRY- (DO N'T Repeat Yourself) अनुवृत्ति। अर्धमात्रा लाघवेन रूप में स्थापित है। पाणिनी ने बहुत सारे तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया है। पाणिनि के सूत्रों के प्रकार जो पहला संज्ञा है जो Function को Define करता है। दूसरी परिभाषा, तीसरी– विधि, चौथी नियम और पांचवी अतिदेश और छठा अधिकार । इसके अतिरिक्त सूत्रों के अन्य दो प्रकार के विभाजन भी है। उत्सर्ग और

अपवाद। इसतरह डॉ. सुभाष ने पाणिनि द्वारा टेक्नोलॉजी का भी जिक्र किया। 2000 धातुएं हैं उन्होंने एक धातवः करके डेटाबेस तैयार किया, उनको जरूरत होने पर कॉल भी कर लिया। इसतरह उन्होंने इकोयणचि सूत्र के द्व ारा सिद्ध भी किया। उसके अतिरिक्त मशीन अनुवाद जैसे तमाम विषयों पर बहुत ही लम्बा और बच्चों की दृष्टि से उपयोगी व्याख्यान दिया।

अन्त में संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. गिरिध ार गोपाल शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने सबसे पहले माघ महोत्सव और संत रविदास जयंती की बधाई देने के बाद वसन्तोत्सव में डॉ. सुभाष चन्द्र जैसे गंभीर विद्वान को सुनने का पुण्य अवसर देने के लिए कॉलेज और संस्कृत विभागाध्यक्ष का आभार व्यक्त किया। फिर संस्कृत समवाय की गौरवशाली परम्परा और वेद व्याख्यान मंजरी का इतिहास भी बच्चों को बताया। फिर कॉलेज की प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा जी द्वारा वेद व्याख्यान मंजरी के शुरू करने तथा उसके हर कार्यक्रम में उपस्थित रहने के लिए भी धन्यवाद दिया। तत्पश्चात कार्यक्रम में शामिल सभी श्रोताओं का धन्यवाद किया। इस अवसर पर विभाग के सभी प्राध्यापक और छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।